वर्ष-10, अंक 30 वां, अप्रेल-जून 2013 मूल्य- ₹12 स्थापना वर्ष- 1918

गोलापूर्व जैन

शाश्व[illegible]ज श्री 1008 सम्मेद शिखर जी (मधुवन) में

म.प्र. बुंदेलखण्ड भवन

पुनीत कार्य हेतु आप सहयोग राशि बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रं. 942010110000685 में जमाकर कार्यालय को सूचित करें।

निवेदक- म.प्र. बुंदेलखण्ड भवन सोसायटी, सागर (म.प्र.)

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन गोलापूर्व महासभा

(रजि. क्र. 06/09/01/06188/07)

प्रधान कार्यालय-द्वितीय तल, तीर्थंकर परिसर,
डॉ. पं. पन्नालाल [illegible] साहित्याचार्य मार्ग
नमकमण्डी, कटरा बाजार, सागर 47[illegible]) फोन-07582-243101

बुन्देखण्ड का नवोदित प्रमुख तीर्थ नन्दपुर (नवागढ़) और वहाँ के कतिपय प्रमुख जिन-प्रतिमालेख

लेखक - डॉ. कस्तूरचन्द्र जैन 'सुमन' जैन विद्या संस्था श्री महावीर जी

जैन तीर्थ नन्दपुर का नामोल्लेख अहार (टीकमगढ़ मध्यप्रदेश) के अतिप्राचीन संवत् 1237 के प्रसिद्ध तीर्थंकर शान्तिनाथ-प्रतिमा की आसन पद उत्कीर्ण नागरी-लिपि और संस्कृत-भाषा के प्रतिमालेख में मिलता है। प्रशस्ति नौ पंक्तियों में निम्न प्रकार है।

(1) ओं नमो वीतरागाय ॥ गृहपतिवंशसरोरुह सहस्ररश्मिः सहस्र-
कूटँ यः। वाणपुरे व्यधिताक्षीत्स्रीमानि -

(2) देवपाल इति ॥1॥ श्री रत्नपाल इति तत्तनयो वरेण्यः पुण्यैक-
मूर्त्तिरभबद्रसुहाटिकायां। कीर्तिज्गन्ति य

(3) पंरिभ्रमणस्रमार्त्तायस्यस्थिराजनि जिनायतनच्छलेन ॥2॥
एकस्तावद नूनबुद्धिनिधिना पूरी शान्तिचैत्यालय

(4) यो दिष्ट्या कंदपुरे परः परनदानंदप्रदः पूरीमता। येन पूरी
मदनेससागरपुरे तज्जन्मनोनिर्म्मिमे सोयं पूरष्ठि वरिष्ठ
गल्हण इति पूरी रल्हणख्याद् ॥3॥ भूत ॥3॥ तस्मादजायत
कुलाम्बर पूर्णचंद्रः पूरी जाहडस्तदनुजोदयचंद्र नामा।
एकः परोपकृति हेतु कृतावतादो धर्म्मात्मकः पुनरमो -

(5) घ सुदानसारः ॥4॥ ताभ्यामसेषदुरितोघसमैक हेतुं निर्म्मा-
पितं भुवनभूषण भूतमेतत्। पूरी शान्तिचैत्यमिति नित्य -
सुखप्रदानात्

(7) मुक्तिं श्रियो वदनवीक्षण लोलुपाभ्याम् ॥5॥ छ छ छ ॥
संवर्त् 1237 मार्ग्गसुदि 3 सुक्रे स्रीमत्परमाडिदेव विजयराज्ये

(8) चन्द्रभास्कर समुद्रतारका यावदत्र जनचित्तहारकाः।
धर्म्मकादिकृत सुद्धकीर्तनं। तावदेवजयतात्सुकीर्तन ॥6॥

(9) वल्हणस्य सुतस्श्रीमान रूपकारो महामतिः। पापटोवास्तुशा-
स्त्रज्ञस्तेन विंवं सुनिर्म्मितं ॥7॥

भावार्थ

पद्य-1 - पंच परमेष्ठियों की वीतरागता के लिए नमस्कार हो। गृहपति वंश रूपी कमलों के लिए सूर्य के समान हुये श्रीमान् देवपाल ने वाणपुर नगर में एक सहस्रकूट चैत्यालय का निर्माण कराया। वाणपुर वर्तमान में टीकमगढ़ से मात्र ग्यारह किलोमीटर दूर पश्चिम में स्थित है।

पद्य-2 - इनके पुत्र का नाम रत्नपाल था। वसुहाटिका नगरी में ये पवित्रता की प्रधान मूर्ति थे। इनकी कीर्ति तीनों लोकों में परिभ्रमण के श्रम से थककर जिनायतन के बहाने स्थिर हो गयी थी।

पद्य-3 - रत्नपाल अपर नाम रल्हण के गल्हण नामक पुत्र हुआ। इसने नंदपुर नगर (जिसे भ्रान्ति से कंदपुर पढ़ा गया है) में शान्तिनाथ चैत्यालय तथा दूसरा चैत्यालय अपने जन्मस्थान मदनेशसागरपुर वर्तमान अहार में बनवाया गया था। ईस्वी अप्रैल 1990 में प्रकाशित अहार क्षेत्र परिचय एवं स्तोत्र पुस्तिका में कंदपुर को नंदपुर कहा गया है। यह नाम युक्तिसंगत प्रतीत होता है।

पद्य-4 - श्रेष्ठी गल्हण के दो पुत्र हुए जाहड और उदयचंद। इनमें जाहड कुलरूपी आकाश के लिए पूर्णचन्द्र थे और उदयचंद परोपकारी, धर्मात्मा और दानी थे।

पद्य-5 - इन दोनों भाईयों ने सम्पूर्ण पापों की शान्ति हेतु, पृथिवी का भूषणस्वरूप शाश्वत सुखप्रदायी होने से मुक्तिरूपी लक्ष्मी के मुखावलोकन के लिए श्री शान्तिनाथ तीर्थंकर की प्रतिमा निर्मित कराई थी।

पद्य-6 - प्रतिमा संवत् 1237 मार्ग सुदि तृतीय शुक्रवार के दिन प्रतिष्ठित हुई। उस समय श्रीमान् परमर्द्धिदेव का राज्य था। यह भी कहा गया है कि जब तक चन्द्र, सूर्य, तारे, समुद्र मनुष्यों के चित्तहारी हैं तब तक धर्मकारियों का सुक्रीतिमय यह सुकीर्तन विजयी रहे। प्रतिबिम्ब वल्हण के पुत्र वास्तुशास्त्र के ज्ञाता पापद थे।

इस प्रतिमालेख के आलोक में दो ऐतिहासिक नगर पढ़ने में आये है - वाणपुर और नन्दपुर। इनमें वाणपुर टीकमगढ़ से मात्र ग्यारह किलोमीटर दूर पश्चिम में विद्यमान हैं जहाँ सहस्रकूट रचना के दर्शन आज भी सुलभ है।

नन्दपुर के सन्दर्भ में वयोवृद्ध विद्वान् श्री पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' से ईसवी 1993 में ज्ञात हुआ था कि यह नगर झाँसी से सोजना मार्ग पर सोजना से चार किलोमीटर उत्तर पूर्व कोण में बाबई नाम से प्रसिद्ध है।

अहार प्रतिमालेख में उल्लिखित नंदपुर नामक ही संभवत: बाबई नाम से भी प्रसिद्ध रहा है। नन्दपुर की दूरी भी अहार से संभवत: वाणपुर के समान ही निकटवर्ती ही रही है। संवत् 1237 के पूर्व यह नगर जैन केन्द्र रहा प्रतीत होता है। जैन परिवार धार्मिक रहे हैं। उनकी धार्मिक प्रवृत्तियों को देखकर ही संभवत: यहाँ भी तीर्थंकर शान्तिनाथ चैत्यालय श्रेष्ठी गल्हण द्वारा निर्मित कराया गया था।

नन्दपुर (नवागढ़) के प्रतिमालेख

ब्र. जयकुमार जी 'निशान्त' नन्दपुर नामक तीर्थक्षेत्र के जीर्णोद्धार हेतु समर्पित ज्ञात होते हैं। प्रतिमालेख पढ़ने के लिए उन्होने पत्र भी लिखा किन्तु मैं वहाँ नहीं पहुँच सका।

ब्र. निशान्त जी ने मेरे निवेदन पर नन्दपुर के प्रतिमालेखों के चित्र भेजे जिनके पढ़ने से निम्न जानकारी प्राप्त हो सकी है। प्रतिमालेख निम्न प्रकार हैं -

चित्र संख्या प्रथम संवत् 1202

इस चित्र में एक दूसरे को देखते हुए दो हरिण आगे का एक-एक पैर ऊपर उठाये हुए, मुँह खोले हुए चित्रित हैं। इस चित्र से अहार प्रतिमालेख में कथित श्रेष्ठी द्वारा नन्दपुर में शान्तिनाथ चैत्यालय पर बनवाया जाना प्रमाणित होता है।

चिह्न की बायीं ओर इसी चित्र में निम्न अभिलेख भी है - पं. 1 - (संवत्) 1202 गोला पं.2 पूर्व्व आन्व (अन्वे) भ्राता (काता) पं. 3 सलदेसल। चिह्न हरिणों की दायीं ओर पं. 1 - सावु के। वे (वै) वसु सु पं. 2 - सा. (साह) आसल

प्रस्तुत प्रतिमालेख से यह भी ज्ञात होता है कि यह वही नगर है जिसका अहार शान्तिनाथ प्रतिमालेख में नन्दपुर नाम आया है।

चित्र संख्या द्वितीय - संवत् 1202

इस चित्र के ऊपरी भाग में छत्र सहित क्रमश: तीन शीर्ष भाग मात्र अंकित हैं। नीचे चार पंक्ति का अभिलेख उत्कीर्ण है -

पं. 1 - (अर) य वि ना। भ (नाभेव) जिन कुंथ्रो

पं. 2 - गोलापूर्व्वान्वये - (वि)

पं. 3 - दिसा

पं. 4 - संवत् 1202 (अपठनीय)

चित्र संख्या तृतीय संवत 1203

यह अभिलेख सिर विहीन पद्मासन मुद्रा में ध्यानस्थ प्रतिमा की आसन पर नागरी लिपि और संस्कृत भाषा की दो पंक्तियों मेंउत्कीर्ण है।

पं. 1 - संवत् 1203 अषाढ़ वदि 10 गोला

पं. 2 - पूर्व्व अन्वे सावु (साव) वीसल सुत मलल (मण्णुण)

यही दो पंक्ति का लेख सर्वांग विभूषित ध्यानस्थ पद्मानस्थ प्रतिमा की आसन पर भी उत्कीर्ण मिला है।

चित्र संख्या चतुर्थ

समय रहित सिर विहीन महावीर प्रतिमा

पद्मासन मुद्रा में ध्यानस्थ खण्डित इस प्रतिमा की आसन पर वायीं ओर पूँछ उठाये मुँह फैलाये विपरीत दिशा में मुँह किये चिह्न स्वरूप सिंह उत्कीर्ण है। मध्य भाग अलंकृत है। उसकी दोनों ओर एक पंक्ति का अभिलेख निम्न प्रकार उत्कीर्ण है -

गोलापूर्व्वान्वये साधु महिचंद भार्या तिसादि (अलंकरण) तत्सुत

साधु ाद (दे) लहरावधू नीलबेनामी एतयापेत प्रशमं। त (प्रणमंति)

चित्र संख्या पंचम - पार्श्वनाथ प्रतिमा

पद्मासन मुद्रा में ध्यानस्थ प्रतिमा के सिर पर नौ संख्यक सर्पफण दर्शाये गये हैं। सर्प का आकार प्रतिमा की आसन से आरम्भ हुआ है। केश भी प्रदर्शित हैं। नेत्र, नासिका, ओष्ठ, सौम्य हैं। कर्ण स्कन्धों से जुड़े है। वक्षस्थल उभरा हुआ है। प्रतिमा चौकोर आसन पर विराजमान है। आसन पर बायीं ओर पद्मावती शासनदेवी है। इसका सिर सर्प फल से विभूषित है। दूसरी ओर धरणेन्द्र देव पद्मासनस्थ हैं।

धरणेन्द्र और पद्मावती के निकट नागरी लिपि तथा संस्कृत-भाषा में निम्न अभिलेख है। इसके दो भाग है। प्रथम भाग तीन भागों में विभाजित है - (1) श्री पारीस (2) तीर्थ का प्र. (3) ती मा 8 ॥

द्वितीय भाग (दायीं ओर) सकें (शक संवत्) 1586 को (2) मी गजमती बा (3) 3

संभवत: यह प्रतिमा कोमी गजमतीवाद के द्वारा प्रतिष्ठित कराई गई थी।

चित्र संख्या षष्ठ चरण युगल

चरण तले दो पंक्ति का नागरी लिपि संस्कृत भाषा का निम्न लेख है -

1. श्री वीदक पट्टदेव: 2. प्रणमंति

चित्र संख्या 65ए (सप्तम्)

ऊपरी भाग में पायल से विभूषित दो चरण मात्र हैं। इनके नीचे दो पंक्ति का लेख है -

(1) सावु वील्हा तस्य सुत लेखन (2) आंविका प्रणमति ॥

चित्र संख्या अष्टम् - अर्हत् प्रतिमा संवत 1203

यह प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में ध्यानस्थ है। कर्ण स्कन्धभाग से जुड़े हैं। आकृति धूमिल है। आसन पर दो पंक्ति का लेख है -

(1) संवत् 1203 असाढ़ वदि 10 गोला

(2) पूर्ण्व अन्वे सावु वीसल सुत मण्णुण

नोट - चित्र संख्या तीसरे का और यह लेख दोनों समान है।

चित्र संख्या नवम्

यह चित्र किसी शासन देव का है। इसके दायें हाथ में गदा आयुध प्रतीत होता है। बायाँ पैर मुड़ा हुआ है। नीचे आसन पर दो पंक्ति का लेख उत्कीर्ण है -

(1) संवत् 1203 असाढ़ वदि 10 गोलापूर्व अ

(2) न्वे सावु रामचंद सुत प्रण .... (मति)

प्रस्तुत प्रतिमालेखों से नन्दपुर गोलापूर्वान्वयी श्रावकों की आवासभूमि रही ज्ञात होती है। यहाँ के जैन श्रावकों के अहार क्षेत्र से मधुर सम्बन्ध भी रहे प्रतीत होते हैं। बुन्देलखण्ड में नन्दपुर अन्य क्षेत्रों के समान आदरणीय धार्मिक क्षेत्र रहा है।